बासव से बिसरत विक्रम की कहा चली,
बिक्रम लखत बीर बखत-बुलंद के।
जागे तेज बृन्द सिवाजी नरिंद मसनंद,
माल-मकरंद कुलचंद साहिनंद के॥
भूषन भनत देस-देस बैरि-नारिन मैं,
होत अचरज घर घर दुख-दंद के।
कनक-लतानि इंदु, इंदु माहि अरविंद,
झरैं अरबिंदन तें बुन्द मकरंद के॥१०९॥

शब्दार्थ—बासव=इन्द्र। बिसरत=भूल जाता है। बिक्रम=विक्रमादित्य, पराक्रम। मसनन्द=गद्दी। माल मकरन्द=मालोजी। दंद=द्वन्द्व, उपद्रव। इंदु=चन्द्रमा।

अर्थ—सौभाग्यशाली वीर शिवाजी के पराक्रम को देखकर लोग इन्द्र को भी भूल जाते हैं अर्थात् इन्द्र जैसे पराक्रमी की गाथाओं को भी भूल जाते हैं, राजा विक्रमादित्य की तो बात ही क्या है। भूषण कवि कहते हैं कि मालोजी के कुल में चन्द्र-रूप शाहजी के पुत्र, गद्दी-स्थित महाराज शिवाजी के तेज-समूह के जागरित होने पर देश-देश के शत्रुओं की स्त्रियों में घर-घर बड़ा दुःख और उपद्रव होता है तथा यह देख कर आश्चर्य होता है कि स्वर्णलता में जो चन्द्रमा है उस चन्द्रमा में कमल हैं और उनमें से पराग की बूँदें गिरती हैं—अर्थात् सोने की लता के समान रंग वाली कमिनियों के मुख-रूपी चन्द्रमा के कमल-रूपी नेत्रों से पुष्परस-रूपी आँसू गिरते हैं।

विवरण—यहाँ केवल उपमान कनकलता, इन्दु, अरविन्द और मकरन्द बुन्द ही कथित हैं; उनसे ही क्रमशः स्त्रियाँ, उनके मुख तथा नेत्र और अश्रु-बूँदों का ज्ञान होता है, अतः रूपकातिशयोक्ति है।